بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in
محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا
01.07.2022

क़ुर्आने करीम की शिक्षानुसार समस्त चमत्कार अल्लाह तआला की ओर से होते हैं तथा किसी इंसान का इसमें दख़ल एवं हस्तक्षेप नहीं होता।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 1 जौलाई 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. के ज़माने में मुर्तद बाग़ियों के विरुद्ध सैन्य अभियानों के वर्णन की श्रंखला नवें अभियान के विषय में फ़रमाया- हज़रत अला रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत जारूद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु को आदेश भेजा कि तुम क़बीला अब्दुल क़ैस को लेकर हुतुम के मुक़ाबले के लिए हजर से मिले हुए इलाक़े में जाकर पड़ाव करो और आप रज़ी. अपनी सेना के साथ हुतुम के मुक़ाबले पर उस इलाक़े में आए। दारैन वालों के अतिरिक्त समस्त मुशरिक लोग हुतुम के पास जमा हो गए, इस प्रकार समस्त मुसलमान हज़रत अला रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु बिन हज़रमी के पास जमा हो गए। दोनों ने अपने अपने आगे एक खाई खोद ली, वे रोज़ाना अपनी खाईयों को पार करके दुश्मन पर हमले करते तथा लड़ाई के बाद फिर खाई से पीछे हट आते।

एक महीना तक युद्ध की यही स्थिति रही, इसी बीच एक रात मुसलमानों को दुश्मन के पड़ाव से अत्यधिक शोर एवं उपद्रव सुनाई दिया। हज़रत अला रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने कहा- कोई है जो दुश्मन की वास्तविक स्थिति की सूचना लाए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हज़फ़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने कहा- मैं इस काम के लिए जाता हूँ तथा उन्होंने वापस आकर यह सूचना दी कि हमारा विरोधी नशे में मदमस्त होकर उलट पुलट बक रहा है, यह सारा शोर उसका है। जब यह सुना तो मुसलमानों ने तुरन्त शत्रु पर हमला कर दिया तथा उनके पड़ाव में घुस कर उनको निःसंकोच मौत के घाट उतारना शुरु किया, वे अपने खाई की ओर भाग गए, कई उसमें गिर कर मर गए, कई बच गए, कई भयभीत हो गए तथा

कुछ लोग या तो मार दिए गए अथवा गिरफ़तार कर लिए गए। मुसलमानों ने उनके पड़ाव की हर चीज़ पर क़बज़ा कर लिया जो व्यक्ति बच कर भाग सका वह केवल उस चीज़ को ले जा सका जो उसके शरीर पर थी परन्तु अबजर जान बचाकर भाग गया।

हुतम के भय तथा घबराहट की ऐसी दशा थी मानो उसके शरीर में जान ही नहीं, वह अपने घोड़े की ओर बढ़ा जबकि मुसलमान मुशरिकों के घेरे में आ चुके थे। अपनी घबराहट में हुतम स्वयं मुसलमानों में से भाग कर अपने घोड़े पर सवार होने के लिए जाने लगा, जैसे ही उसने रकाब में पाँव रखा वह टूट गई। हज़रत क़ैस रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु बिन आसिम ने उसे नरक में पहुंचा दिया।

मुशरिकों के निवास स्थानों की हर चीज़ पर क़बज़ा करने के बाद सुबह को हज़रत अला रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने युद्ध से प्राप्त धन सम्पत्ति मुजाहिदों में वितृत कर दी तथा ऐसे लोगों को जिन्होंने विशेष रूप से युद्ध में दलेरी दिखाई थी, मरने वाले सरदारों के बहुमूल्य वस्त्र भी दिए। उनमें हज़रत अफ़ीफ़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु बिन मुंज़िर, हज़रत क़ैस रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु बिन आसिम तथा हज़रत समामा रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु बिन उसाल शामिल थे।

हज़रत समामा रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु को जो कपड़े दिए गए उनमें हुतम का एक काले रंग का मूल्यवान वस्त्र था जिसको पहन कर वह बड़े घमंड तथा अहंकार के साथ चला करता था। इस सैन्य अभियान की सफलता की सूचना पत्र द्वारा हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु को दी गई।

हजर तथा उसके आस पास के क्षेत्र पर हज़रत अला रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु का क़बज़ा हो गया किन्तु अनेक स्थानीय फ़ारसी इस नए शासन के विरुद्ध रहे। वे प्रायः यह ख़बर फैला कर लोगों में भय पैदा करते कि बस कोई दम जाता है कि हजर में मदीना के शासन की बिसात उलट जाएगी, मफ़रूक़ शीबानी अपनी क़ौम तग़लब तथा नमिर की सेनाएँ लिए चला आ रहा है। ये बातें ज्ञात होने पर हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अला रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु को लिखा कि यदि विश्वस्त सूत्रों से यह जानकारी मिल जाए कि बनू शीबान बिन सअलबा तुम पर हमला करने वाले हैं तथा उपद्रवी लोग यह ख़बर फैला रहे हैं तो उनके विध्वंस के लिए सेना को भेज देना, उनको रौंद डालना तथा उनके सहयोगी क़बीलों को ऐसा भयभीत करना कि उन्हें कभी सिर उठाने का साहन न हो। मुर्तद लोग दारैन (ख़लीज महाद्वीप तथा फ़ारस) में जमा हो गए। हज़रत अला रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु से पराजित होने के बाद हारे हुए बाग़ियों का एक बड़ा भाग नावों में बैठ कर दारैन चला गया तथा दूसरे लोग अपने अपने क़बीलों के इलाक़ों में पलट गए।

बहरीन में फ़ितने की आग बुझाने में मुसन्ना रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु बिन हारसा की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। उन्होंने अपनी सेना के साथ हज़रत अला रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु बिन हज़रमी का साथ

दिया तथा बहरीन से उत्तर की ओर रवाना हुए, क़तीफ़ तथा हजर पर क़बज़ा किया, अपने इस मिशन में लगे रहे यहाँ तक कि फ़ारसी सेना तथा उसके सैनिकों पर ग़ालिब आए जिन्होंने बहरीन के मुर्तदों की सहायता की थी।

हज़रत अला रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु अभी तक मुशरिकों की सेना में ही ठहरे हुए थे। आप रज़ी. को बनू बकर बिन वायल को लिखे गए पत्रों के जवाब में इच्छानुसार सूचना मिल गई अर्थात कि वे मुसलमान हैं, विरोध नहीं कर रहे तथा लड़ाई नहीं करेंगे तथा उनको विश्वास हो गया कि उनके जाने के बाद पीछे बहरीन वालों में से किसी के साथ कोई दुःखद घटना नहीं घटेगी तो समस्त मुसलमानों को दारैन की ओर चलने तथा बढ़ने का निमंत्रण दिया।

बयान किया जाता है कि मुसलमानों के पास नाव इत्यादि नहीं थी जिस पर सवार होकर वे द्वीप तक पहुंचते। यह देख कर हज़रत अला बिन हज़रमी खड़े हुए तथा लोगों को जमा करके उनके सामने तक़रीर करते हुए कहा- अल्लाह ने तुम्हारे लिए शैतानों के गिरोहों को जमा तथा युद्ध को समुद्र में धकेल दिया है, वह पहले धरती पर तुम्हें अपने निशान दिखा चुका है ताकि उन निशानों के माध्यम से समुद्र में भी तुम समझ सको, अपने शत्रु की ओर चलो, समुद्र को चीरते हुए उसकी ओर आगे बढ़ो क्यूँकि अल्लाह ने उन्हें तुम्हारे लिए एकत्र किया है। उन सबने जवाब दिया- बख़ुदा, हम ऐसा ही करेंगे तथा दहना नामक घाटी का चमत्कार देखने के बाद हम जब तक जीवित हैं, इन लोगों से नहीं डरेंगे।

अल्लाह की क़ुदरत हज़रत अला रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु तथा समस्त मुसलमान उस स्थान से चल कर समुद्र के किनारे आए तथा यह दुआ कर रहे थे- يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ يَا كَرِيْمُ يَا حَلِيْمُ يَا اَحَدُ يَا صَمَدُ يَا حَيُّ يَا مُحْيِ الْمَوْتٰى يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ يَا رَبَّنَا۔ आप रज़ी. ने यह दुआ करते हुए सेना के समस्त लोगों को समुद्र में अपनी सवारियाँ डालने के लिए कहा, सबने ऐसा ही किया तथा उस घाटी को बिन किसी हानि के पार कर लिया।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह ने फ़रमाया- दारैन पहुंच कर दोनों पक्षों के बीच अत्यंत रक्तपाती युद्ध हुआ, सब बाग़ी मारे गए, कोई सुचना देने वाला भी न बचा। मुसलमानों ने उनके बाल बच्चों को सेवक एवं ग़ुलाम बना लिया तथा उनकी सम्पत्ति पर क़बज़ा कर लिया, हर एक घुड़सवार को छः हज़ार तथा हर एक पैदल सैनिक को युद्ध की विजय में हाथ आए धन में से दो हज़ार दर्हम मिले।

(दसवाँ सैन्य अभियान, हज़रत सुवैद रज़ीयल्लाहु अन्हु बिन मुक़र्रन तिहामा का यमन के मुर्तद बाग़ियों की ओर)

हज़रत सुवैद बिन मुक़र्रन मुज़नी ने पाँच हिजरी में इस्लाम क़बूल किया। तिहामा वासियों के मुर्तद होने तथा बग़ावत करने की घटनाएँ तथा वृत्तांतों के विवरण में एक लेखक ने लिखा है, यहाँ इर्तदाद को कुचलने में ताहिर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु बिन अबी हाला सर्वप्रथम थे जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से तिहामा के भाग पर निगरान थे। फिर हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने सकून व सकासक (हिज़्रे मौत) के निगरान उकाशा रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु बिन सौर को आदेश दिया कि वे तिहामा में ठहरें तथा अपने पास उसके निवासियों को एकत्र करके आदेश की प्रतीक्षा करें। बजीला नामक क़बीले के पास हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने जरीर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु बिन अब्दुल्लाह बजली को वापस भेजा तथा उन्हें आदेश दिया कि वे अपनी क़ौम में से जमे रहने वाले मुसलमानों को लेकर इस्लाम के मुर्तदों से युद्ध करें तथा फिर ख़श्अम नामक क़बीले के पास पहुंचें तथा उसके मुर्तदों से युद्ध करें। आप रज़ी. अपने अभियान पर रवाना हुए तथा हुक्मे सिद्दीक़े अकबर रज़ी. बजा लाए। थोड़े से लोगों के अतिरिक्त उनके मुक़ाबले पर कोई न आया, आप रज़ी. ने उन्हें मार डाला तथा तितर बितर कर दिया।

ख़ुत्बः सानियः से पहले हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु ने आतंकवादी घटना में शहीद होने वाले दो ख़ादिमों मुकर्रम डेको ज़िकरिया साहब तथा मुकर्रम डेको मूसा साहब ऑफ़ डोरी रीजन, बर्कीना फ़ासो, इसी तरह तीन मृतकों मुकर्रम मुहम्मद यूसुफ़ साहब बिलोच, बस्ती सादिक़पुर ज़िला उमर कोट, सिंध, वाक़िफ़ा नौ मुकर्रमा मुबाज़रा फ़ारूक़ साहिबा ऑफ़ रबवा तथा लोकल मुअल्लिम सिलसिला मुकर्रम आनज़ोमाना साहब ऑफ़ आयवरी कोस्ट का सविस्तार सद्वर्णन तथा जुम्अः की नमाज़ के बाद उनका जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने का इरशाद फ़रमाया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652
टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131